ISSN 2277-5951

# हाशिये की आवाज़

संघर्षरत लोगों की प्रथम मासिक पत्रिका




समाज की महिलाएं आगे

(अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस पर विशेष)

KANARA WELFARE TRUST
DIVEKAR COLLEGE OF COMMERCE
KARWAR

PRINCIPAL
Kanara Welfare Trust's
Divekar College of Commerce

परिवार में बच्चे कम हो। भारतवर्ष में खुशहाल परिवार के लिए प्रचलित परिवार नियोजन का नारा आजादी के बाद का है, परन्तु बाबा साहेब स्त्री के संदर्भ में परिवार नियोजन के फायदे बहुत पहले ही देख लिए थे। वे ये भी जानते थे कि इन सबके लिए देश के युवा वर्ग को समझाने एवं उसको साथ लेने से ही परिवार को खुशहाल बनाया जा सकता है। इसलिए उन्होंने 1938 में विद्यार्थियों की एक सभा में बोलते हुए कहा–'परिवार नियोजन की जवाबदेही स्त्री–पुरूष दोनों की होती है। बच्चों का लालन–पालन हम अच्छी तरह कर सकते हैं। कम संतान होने पर स्त्रियां अपनी शक्ति बाकी कामों में लगा सकती हैं।'[2]

स्त्रियों की समानता और स्वतंत्रता के संदर्भ में डॉ. अम्बेडकर बाकी चिंतकों एवं समाज–सुधारकों से काफी आगे की समझ रखते थे। अन्य समाज–सुधारक जहां नारी शिक्षा को परिवार की उन्नति एवं आदर्श मातृत्व को संभालने या नारी की स्त्रियोचित गुणों के कारण ही उसकी उपयोगिता पर बल देते थे, परन्तु नारी भी मनुष्य है, उसके भी अन्य मनुष्यों के समान अधिकार हैं, इस बात को स्वीकार करने में हिचकिचाते थे। उसकी इस मानवीय गरिमा को सर्वप्रथम आधुनिक युग में डॉ. अम्बेडकर ने ही स्थापित किया। वे चाहते थे कि पत्नी की स्थिति घर में दासी जैसी न होकर उसकी हैसियत बराबरी की हो। उन्होंने लड़कों के समान लड़कियों को पढ़ाने के साथ–साथ उसका विवाह भी उचित उम्र में हो, इस पर बार–बार जोर दिया।

इस विषय पर बोलते हुए डॉ. अम्बेडकर कहते हैं– 'शादी एक महत्पूर्ण जवाबदारी है। शादी करने वाली हर औरत को उसके पक्ष में खड़ा रहना चाहिए, लेकिन उसको दासी नहीं, बल्कि बराबरी के नाते या मित्र के तौर पर। यदि ऐसा करोगी, तो अपने साथ समाज का भी अभ्युदय करोगी और अपना सम्मान बढ़ाओगी। इस हेतु सभी स्त्रियों को पुरूष के बराबर हिस्सेदारी कर खुद को शासक की जमात बनाने हेतु प्रयास करना चाहिए।'[3]

डॉ. अम्बेडकर महिलाओं को समाज द्वारा दी गई उनकी भूमिकाएं मां, पत्नी, बहन एवं उसके स्त्रियोचित गुणों से इतर उन्हें पूर्ण स्वतंत्र, स्वस्थ एवं प्रगतिशील कर्मठ मानवी के रूप में देखते थे। उनके जीवन–दर्शन में निहित स्वस्थ, प्रफुल्लित, शिक्षित एवं सामाजिक सरोकारों में भागीदार दलित और गैर–दलित स्त्री अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान पर स्थापित थी।

**सन्दर्भ**


1. धनंजय कीर, अम्बेडकर–लाइफ एण्ड मिशन
2. देखें वही
3. देखें वही


□□


**सम्पर्क** : ए. डी.-118 बी, शालीमार बाग, दिल्ली-110088

ईमेल : anitabharti@gmail.com


**कवि की पंक्तियाँ**

## अपना हौसला बुलन्द करना

नारी न समझ नाजुक नाजुक
भूल जा सारे सुख और दुःख,
आए बाधाएं हजार तुझ पर
बनाए रख जीवन का रूख।
अरूणिमा भी एक नारी है
साहसी, पुरुषों पर भारी है,
दरिन्दों का यहाँ कमी नहीं
पर नारी शक्ति भी कमी नहीं।
फेंका गया चलती रेल से
टूटे–पैर, टकराए अन्य रेल से,
खुद को पाया अस्पताल में
दिल टूट गया अपने आप में।
फिर धीरज बांधी एक क्षण में
विकलांग बनी, मन था साहसी
हिमालय चढ़ने की बनी प्यासी
बिना पैर के कैसे चढ़ेगी?
मुश्किल मंजिल कैसे छुएगी
सोचते रहे अपने–पराये,
मर्द की बेटी न छोड़ पीछा
अभ्यास पाया न रहा ओछा।
सरल पहुंची हिमालय की चोटी
बन गई पहली विश्व की बेटी।
न समझ तुझमें है न्यूनता
नारी तुझमें विपुल महानता,
तुम बदलोगी सारा विश्व समझना
तुम नहीं जग सारा सुना–सुना।
एक श्वांस तुम धैर्य का भरना
परम्परा का रूप नया बनाना
संध्या तुम कदम बढ़ाते जाना
अपना हौसला बुलन्द करना
अपनी मंजिल आसान पाना।


**संध्या दत्ता कदम**

**सम्पर्क** : बापूजी कला और वाणिज्य कॉलेज, सदाशिवगढ़, तह.-कारवार, जिला-उत्तर कन्नड-581352, कर्नाटक